post is made, the suitability and experience and other things are taken into account. There are IAS officers who have been drafted for managing the plants when they are suitable. People from the private sector, if they are suitable, have been brought in the public sector. The point is whether those who are there is these undertakings are following the policy laid down by Government and Parliament and whether they are exercising their responsibilities properly. These are the considerations that should be taken into account and not the previous experience or the previous background only; that applies to army officers and that applies to Mr. Billimoria and everybody also. I have not found anything to suggest that because of his bad functioning or because of his bias allthese problems are there. But if there is. anything, certainly, I am prepared to look into it. But I would again say that it is a national plant and it is in the interests of everybody concerned that the production should improve, that the industrial relations should improve, and I think that everybody should create that climate.

SOME HON. MEMEERS *rose*---

MR. SPEAKER : We have spent about 25 minutes already on this question. I am not going to allow any further questions.

Installations of computers in Railways and retrenchment of temporary Employees

+

*32. SHRI RAM CHARAN :
SHRI SHRI GOPAL SABOO :
SHRI SHIV CHARAN LAL :
SHRI SHIV KUMAR SHASTRI :

Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state :

(a) the total number of Computers installed on the Railways;

(b) the work ratio between a and human hands:

(c) the total number of temporary employees retrenched since the installation of the computers;

(d) whether Government propose to stop further computerisation in the Railways in view of the accentuated unemployment problem; and

(e) if not, the reasons therefor ?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI R. L. CHATURVEDI) : (a) Fourteen computers are at present installed on the indian Railways.

(b) It is not possible to give any general figure of a workratio between a computer and human hands. This would, to a large extent, depend upon the nature of the work put on the computer, the method adopted for doing the work manually and the method adopted for doing the work on the computer.

(c) Nil.

(d) and (e). No; but subject to such guidelines as may be laid down by the Government, applications will be extended in a phased and selective manner, with the primary object of improving efficiency of working on the Indian Railways, improving customer services and utilising, to the best advantage, the available assets and resources. There will be no retrenchment of railway employees owing to the progress of computerisation. This is not likely to cause an adverse effect on the future employment potentiality, either because, with better programme, railways should be in a position to improve the traffic position and offer larger employment.

श्री रामचरण : इस पार्लियामेंट के अन्दर सैकड़ों दफे यह प्रश्न उठाया गया है। लेकिन मंत्री जी ने हमेशा इसके बारे में गोल मटोल जवाब दिया है। कम्प्यूटर लगाने से अनएम्प्लायमेंट होता है क्योंकि मशीनरी लगाये

जाने से मैनपावर कम लगेगी। हमारे देश में चौदह कम्प्यूटर लगाये जा चुके है।

अध्यक्ष महोदय : आप प्रश्न कीजिये।

श्री रामचरण : मंत्री जी को कुछ पता नहीं है। उन्होंने जवाब दिया कि अभी तक वह यह रेशियो नहीं कम्प्लीट कर पाये कि एक मशीन कितने आदमियों का सब्स्टिट्यूट है। उन्होंने कहा है कि कम्प्यूटर लगाने में ट्रैफिक पोजीशन को भी रेलवे इम्प्रूव कर सकेगी और एम्प्लायमैंट भी ज्यादा दे सकेगी। मैं जानना चाहता हूं कि चौदह कम्प्यूटर लगाये जाने में मशीनों पर कितना पैसा खर्च हुआ है और कितना एम्प्लायमैंट प्रोवाइड किया गया है। मंत्री जी कहते हैं कि कोई आदमी रिट्रैंच नहीं हुआ। अगर कोई रिट्रैंच नहीं हुआ तो मंत्री महोदय यह बतलाये कि कम्प्यूटर लगने के पहले कितने आदमी काम करते थे और कम्प्यूटर लगने के बाद कितने आदमी काम करते हैं।

रेलवे मंत्री (श्री नन्दा) : जो कुछ कहा गया है वह सही है। अगर यह देखा जाय कि कम्प्यूटर लगाये जाने से पहले कितने आदमी काम करते थे और उसके बाद कितने काम करते हैं तो उससे अन्दाजा लग जायेगा कि कितने आदमियों को बेकार किया गया। सही बात यह है कि उससे कोई खास फर्क नहीं पड़ा है इसकी वजह यह है कि उसके पहले भी एक किस्म की डेटा प्रोसैसिंग मशीनरी थी। कुछ थोड़ा सा फर्क जरूर हुआ होगा लेकिन कोई खास फर्क नहीं पड़ा है। इसके अलावा जो गारन्टी दी गई है वर्कर्स को...

श्री राम सेवक यादव : जो भी फर्क हुआ है उसको एग्जेक्टली बतलाया जाय ताकि भ्रम दूर हो जाये।

श्री नन्दा : मेरे ख्याल में कि 5 परसेंट भी नहीं हुआ होगा। इसके अलावा जब उनको गारन्टी है इस बातकी कि किसी को बेकार या रिट्रैंच नहीं किया जायेगा, किसी की अर्निंग्स पर असर नहीं पड़ेगा, किसी के प्रमोशन पर कोई असर नहीं पड़ेगा, किसी का उसकी मर्जी के खिलाफ ट्रांसफर नहीं किया जायेगा, तब इस सवाल का कोई महत्व नहीं रह जाता।

श्री रामचरण : मंत्री जी ने कहा कि कोई अन्तर नहीं पड़ना एम्प्लायमैंट में। मैं उन से जानना चाहता हूं कि जब कम्प्यूटर इन्स्टाल नहीं हुए थे तब कितने आदमियों को सर्विस मिलती थी और कम्प्यूटर लग जाने के बाद उन जगहों पर कितने आदमी काम करते हैं। या आई बी एम कम्पनी को फीड करने के लिये यह पालिसी ऐडाप्ट कर रक्खी गई है जिसमें फारेन एक्सचेन्ज इन्वाल्व्ड है।

श्री नन्दा : मैंने पहले बतलाया कि जो इक्विपमैंट पहले था उसको ही इससे कुछ ज्यादा एफिशिएंट बनाया गया है। वर्कर्स के एम्प्लायमैंट के ऊपर कोई खास असर नहीं पड़ा है।

श्री रामावतार शास्त्री : मंत्री जी ने यह नहीं बतलाया कि अगर मशीन न लगाई जाती तो कितने आदमियों को काम मिलता। वह यह बतलायें।

श्री श्री गोपाल साबू : मैं जानना चाहता हूं कि क्या कम्प्यूटरों के प्रयोग के बारे में कोई नीति बनाई गई है, और रेलों में कम्प्यूटरों के इस्तेमाल से आम जनता पर क्या प्रभाव पड़ेगा? माल भेजने में समय की कितनी कमी होगी, और खर्च कितना कम होगा?

मैं यह भी जानना चाहता हूं कि कम्प्यूटरों द्वारा एकत्र जानकारी अथवा आंकड़े गलत रूप में प्रयुक्त न किये जा सकें इसकी रोक थाम के लिये क्या कदम उठाये गए हैं?

श्री नन्दा : सिर्फ रेलवे के लिये नीति

बनाने का कोई सवाल नहीं था। यह सारे राष्ट्र का प्रश्न है, इसलिये यह नीति बनाई गई है हमारी स्टैंडिंग लेबर कमेटी में, इसके अलावा नेशनल लेबर कमिशन ने भी इस सवाल पर अपनी राय जाहिर की है और कुछ सिफारिशें भी की हैं। उसमें जो कुछ कहा गया है उसके मुताबिक काम किया जा रहा है।

श्री शिव चरण लाल : कम्प्यूटर्स के लगने से मैं जानना चाहता हूं कि रिटायर होने वाले व्यक्तियों को जगह नए आदमी लिए जायेंगे या नहीं लिये जायेंगे ?

साथ ही साथ मैं यह भी जानना चाहता हूं कि उन लोगों को प्रोमोशन पर, उनकी अर्निंग्ज़ पर इसका कोई असर पड़ेगा या नहीं पड़ेगा ?

श्री नन्दा : मैं कह चुका हूं कि किसी के भी ऊपर कोई असर नहीं होगा। उसकी अर्निंग्ज़ कम हों या प्रोमोशन जो होनी चाहिये वह न हो, ऐसी बात नहीं होगी। सारे उनके राइट्स प्रिज़र्व किए गए हैं।

श्री शिव कुमार शास्त्री : अभी मन्त्री महोदय ने बताया है कि संगणकों की व्यवस्था से पहले ही हमारे पास एक विशेष प्रकार की मशीन थी, एक्विपमेंट था और उसमें कुछ परिवर्तन करके संगणकों को लगाया गया है। हमारी आपत्ति तो उस मशीन के ऊपर है जो पहले से लगी हुई थी और तब जबकि हजारों व्यक्ति बेकार थे। मैं जानना चाहता हूं कि संगणकों और पहले वाली मशीन को हटा कर जो बेरोजगार व्यक्ति हैं क्या आप उनको पहले रोज़गार देने का प्रयत्न करेंगे ? आप बार बार कहते हैं कि किसी को भी नहीं हटाया गया है। अगर यह बात सही है तो फिर यह बेकार का बोझ क्यों लाद दिया गया है जबकि इसका कोई फायदा नहीं हुआ है ?

श्री नन्दा : बेकारी इसकी वजह से नहीं है। इस किस्म का इन्तजाम करने से बेकारी कम होगी, ज्यादा एफिशेंटली काम होगा और आज के मुकाबले में ज्यादा अच्छे काम होंगे। रेलवे को एक्सपैंड किया जा सकेगा। इससे बेकारी दूर होगी।

SHRI KRISHNA KUMAR CHATTERJI : The hon. Minister's reply is not convincing in this sense that after this computerisation we have seen its impact on the whole employment system. I can tell him that his statement is self-contradictory. Therefore, will the hon. Minister explain how after computerisation no retrenchment will be necessary ?

SHRI NANDA : I have explained that we had unit record equipment already, where the cards were being punched and fed into the machine. It is extention of the same process. A large number of persons were employed for that method of data processing, and that number has not been affected.

श्री हुकम चन्द कछवाय : एक प्रश्न के उत्तर में मंत्री महोदय ने बताया है कि इन मशीनों को लगाने से कार्य दक्षता अधिक बढ़ी है। मैं प्रार्थना करता हूं कि आप प्रधान मंत्री जी से कहें कि एक मशीन यहाँ भी लगा दी जाए ताकि जो मंत्री ठीक से काम नहीं करते हैं, वे ठीक से काम कर सकें, उनमें दक्षता आए...

श्री कंवर लाल गुप्त : आप का मतलब है कि मंत्री की जगह कम्प्यूटर ?

श्री हुकम चन्द कछवाय : कम्प्यूटर अच्छा काम करते हैं, ईमानदारी से काम करते हैं। अभी बताया गया है कि चौदह मशीनें लगाई गई हैं। मैं जानना चाहता हूँ कि किन किन जोंज़ में इनको लगाया गया है और इन मशीनों के ऊपर आज तक कितना खर्चा आ चुका है ? आपने कहा कि मशीनें काफी अच्छा काम करती है। इससे साफ दिखाई देता है कि आप और

भी ज्यादा मशीनें लगाने वाले हैं। मैं जानना चाहता हूँ कि कितनी और मशीनें आप देश में लाने वाले हैं, कितनी और लगने वाली हैं और उन पर कितना खर्च होने वाला है ?

श्री नन्दा : रेलवे का अभी कोई और कम्प्यूटर लगाने का इरादा नहीं है। जो कमेटी बिठाई गई है इस मामले का फैसला करने के लिए, जब तक वह अपना फैसला नहीं दे देती है, तब तक हम कोई नए कम्प्यूटर लगाने वाले नहीं है। इनको हम खरीदते नहीं हैं। इनका किराया देते हैं, चालीस हजार या पचास हजार या साठ हजार।

श्री कंवर लाल गुप्त : कितना कुल किराया दिया है ?

श्री नन्दा : चौदह जगह हैं। पचास हजार एव्रेज आप लगा कर हिसाब लगा सकते हैं। इनका रेंट दिया जाता है। नए कम्प्यूटर नहीं लगाए जाएंगे जब तक कि कमेटी का फैसला नहीं आ जाता है।

श्री हुकम चन्द कछवाय : कौन-कौन से जोंज में लगाए हैं। इसका जवाब नहीं आया है।

SHRI NANDA : All the nine railways have got, three production units have got, Moghulsarai marshalling yard has got, there is one in the Railway Board.

SHRI S.M. BANERJEE : It is known to the Railway Minister, if he really professes to be socialist, that it is the policy of the American Government to impose these computers on countries which are economically backward, to create economic crisis in those countries by unemployment. Th t is why this company is giving it onloan and on hire purchase system. Is it a fact that the railwaymen or the All India Railwaymen's Federation were never consulted before having this ? In the LIC the insurance employees were consulted and the United Front Government in West Bengal did not allow the installation of the computer as long as it was there. Will this be considered *de novo* in consultation with the railway employees ? This may not result in immediate retrenchment but even John Kennedy could not give an assurance to the American people that computerisation will not result in retrenchment.

SHRI NANDA : What I am saying is on the basis of the situation as I understand it. I have already stated that there is not going to be any addition to the computers without considering the advice and recommendations of the committee appointed for that purpose. The Railways did have consultations with the railwaymen before the installation of the computer; I have a whole list of letters exchanged and discussions held. This was in accordance with the policy adopted.

श्रीमती सुशीला रोहतगी : कम्प्यूटर के बारे में देश में अभी दो भिन्न-भिन्न मत हैं। अन्य देशों में जहाँ कम्प्यूटर का सिस्टम सफल हो रहा है, वहां जो परिस्थितियां हैं उनमें से बहुत परिस्थितियां देश में अभी मौजूद नहीं हैं। यदि किसी प्रकार के सरकार के आश्वासन को स्वीकार भी कर लिया जाए कि कम्प्यूटर की उपयोगिता देश में है और उससे किसी प्रकार का रिट्रेंचमेंट नहीं होगा, मैं केवल इतना स्पष्ट रूप से जानना चाहती हूं कि जिस अनुपात में कम्प्यूटराइजेशन के लिए देश में अभी रुपया लगाया गया है, क्या उसी अनुपात से इसकी उपयोगिता भी यहां सिद्ध हो रही है या नहीं हो रही है ?

श्री नन्दा : मैंने यह नहीं कहा कि कम्प्यूटराइजेशन से बेकारी नहीं हो सकती है। मैंने सिर्फ इतना ही कहा है कि जिस तरह से कम्प्यूटराइजेशन हुआ है रेलवेज में अभी तक उससे बेकारी नहीं हुई है। मैं मानता हूं कि

कम्प्यूटराइजेशन से काफी बेकारी हो सकती है। जहां तक रेलवेज का सम्बन्ध है हम कोई और चीज तब तक नहीं करने वाले हैं जब तक कि कमेटी की रिपोर्ट नहीं आ जाती है और लेबर से बातचीत नहीं हो जाती है।

SHRI UMANATH : The hon. Minister says that far from resulting in unemployment, the introduction of electronic computers will result in increased avenues of employment. I should like to know from the hon. Minister whether he is aware of the fact that there are umpteen reports in the USA from where we get these computers that these computers have resulted in unemployment in the United States. There are umpteen Government reports and also reports of various employee's organisation to that effect. What is the magic involved in it which creates unemployment there but once it crosses the Indian borders and comes into our country it creates employment.

श्री नन्दा : मैंने जनरल स्टेटमेंट नहीं किया है कि कम्प्यूटराइजेशन से एम्प्लायमेंट कम नहीं होती। मैंने कहा है कि जिस ढंग से हमने किया है उससे कम नहीं हुई है। मैं आपको एक मिसाल देता हूं। रेलवे में पहले किसी कमोडिटी से जो अर्निन्ज होते थे उसको जानने में कई महीने लग जाते थे लेकिन अब बीस दिन के अन्दर इसका पता लग जाता है। हम जान जाते हैं कि अर्निन्ज बढ़ रहे हैं या कम हो रहे हैं। इससे हमें रोड कम्पीटीशन से मुकाबला करने में मदद मिलती है। वैगंज की मूवमेंट के बारे में कम्प्यूटर से हमें पता लगता है कि कौन वैगन कहां है किस जगह अगर ज्यादा होल्डिंग्ज है तो उसे हम कम कर सकते हैं। और एफिशेंट युटिलाइजेशन आफ वैगंज, इनवेंटरी कंट्रोल, एसी बहुत सी चीजें स्टोर में हो सकती हैं।

SHRI HEM BARUA : Is it a fact that the installation of computers in the railways has led to retrenchment of some railwaymen and, if so, would the Government give any assurance that they would be fruitfully employed in other avenues of life ?

SHRI NANDA : There has been no retrenchment; everybody who has been affected has been fully provided for.

Setting up of breweries with foreign collaboration

+

*33. SHRI S.M. KRISHNA :
SHRI YAMUNA PRASAD MANDAL :
DR. SUSHILA NAYAR :

Will the Minister of INDUSTRIAL DEVELOPMENT AND INTERNAL TRADE be pleased to state :

(a) whether Government have sanctioned foreign collaboration agreements with two foreign breweries, as reported in the *Hindustan Times* dated the 15th June, 1970;

(b) whether it is a fact that in the case of one of the companies the proposal should not have been accepted because India possessed the technical know-how on brewery; and

(c) if so, the reasons for accepting the proposal and granting the collaboration ?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT AND INTERNAL TRADE (SHRI M.R. KRISHNA) : (a) Government have so far sanctioned only one foreign collaboration agreement for the manufacture of beer.

(b) and (c). According to the D.G.T.D. indigenous technical know-how is available with the existing manufacturers who make beer primarily for internal consumption. But in order to improve the quality of beer particularly for competing effectively in the international market, Government have considered and are considering the proposals for foreign technical collaboration in this field on merit provided there is an export angle and guaranteed exports would subs-